प्रत्यय (Suffix) - संपूर्ण मार्गदर्शिका

e-gyansetu.com | हिंदी व्याकरण विशेष नोट्स

1. परिभाषा (Definition)

वे शब्दांश जो किसी सार्थक शब्द के **अंत में** जुड़कर उसके अर्थ में नयापन, विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं।

शाब्दिक अर्थ: प्रति (साथ में, पर बाद में) + अय (चलने वाला)।

2. मुख्य बिंदु (Key Highlights)

- प्रत्यय का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता।
- इनका अपना कोई अर्थ नहीं होता, ये शब्द के साथ जुड़ने पर ही अर्थवान होते हैं।
- ये नए शब्दों के निर्माण (Word Formation) में सहायक होते हैं।

3. प्रत्यय के भेद एवं उपभेद

क. कृत् प्रत्यय (Krit Pratyay)

ये क्रिया के मूल रूप (धातु) के पीछे जुड़ते हैं। इनसे बने शब्दों को 'कृदंत' कहते हैं।

उपभेद	विशेषता	प्रमुख उदाहरण
कर्तृवाचक	कर्ता (doer) का बोध	पाठक, गायक, तैराक
कर्मवाचक	कर्म का बोध	खिलौना, ओढ़नी, बिछौना
करणवाचक	साधन का बोध	बेलन, झाड़ू, झूला

उपभेद	विशेषता	प्रमुख उदाहरण
भाववाचक	क्रिया से भाव बनाना	लिखावट, लड़ाई, मुस्कुराहट

ख. तद्धित प्रत्यय (Taddhit Pratyay)

ये संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़ते हैं।

संबंधवाचक चचेरा, ममेरा, भारतीय

भाववाचक मानवता, बुढ़ापा, मिठास

गुणवाचक चमकीला, विषैला, दयालु

ऊनवाचक लुटिया, खटिया, रस्सी

4. महत्वपूर्ण उदाहरण (Top Examples)

समाज + **इक** = सामाजिक	मीठा + **आस** = मिठास
पढ़ + **आकू** = पढ़ाकू	भला + **ई** = भलाई
लिख + **आवट** = लिखावट	बच्चा + **पन** = बचपन

यह पीडीएफ e-gyansetu.com द्वारा शैक्षिक सहायता हेतु तैयार की गई है।

© 2026 e-gyansetu.com